1–भाषाद्रोही

हिन्दी गंगा है वकतव्य सुनकर एक श्रोता प्रतिक्रिया स्वरूप बोला बकवास है । पीछे बैठे व्यक्ति से रहा नही गया वह उत्तेजित होकर बोला अरे चुप रह भाषाद्रोही ।

2–बोहनी

पैसेन्जर–टी.टी से –सर ए–टू कम्पार्टमेण्ट में भी सीटें है यही चेक कर देगे ।
टी.टी.सीट एडजेस्ट करवा दिया यह भी कर देता हूं ।
पैसेन्जर टी.टी. को टिकट थमाकर बैठ गया ।
टी.टी. बोला शादी में जा रहे है क्या ?
पैसेन्जर–हां ।
टी.टी.– बोहनी करवाईये ।

3–शिकारी

सुबह नौ बजे से रात आठ–आठ बजे तक काम ले रहा है,इसके बाद भी गलती निकाल कर गुर्राता है । आदमी बीमारी की हालत में भी काम कर रहा है जबकि आराम की सख्त जरूरत है । प्रोत्साहन के बदले दण्ड कैसा निर्दयी है ?
हां रामू–उंची योग्यता के बावजूद पद–दलित का दुख भोग रहा हूं ।
रामू–दुखीबाबू मुखिया को मुख की भांति होना चाहिये पर ये तो शिकारी हो गया है ।

4–डिनर पार्टी

आ गये । वक्त के बड़े पाबन्द हो छोटा कर्मचारी होकर भी ।
फर्ज है । कर्म भी तो पूजा है ना ।
डिनर पार्टी में क्यो नही आये ?
छोटा कर्मचारी तो काम के लिये होता है ।लोग आंसू देकर काम करवाना जानते है । वैसे कौन पूछता है मुझ जैसा छोटा आदमी तो आंसू पीने के लिये पैदा हुए है।
शोषण और आंसू देने वाले लोग गिरे हुए होते है ।

5– श्रवणकुमार

पापा दादाजी खफा क्यों रहते है ।
क्यों खफा होगे ?
मम्मी इतनी खातिरदारी करते है।दादाजी की जैसी सेवा हो रही है वैसी तो कम लोगो की होती है। हम भाई –बहन एक पांव पर खड़े रहते है । इसके बाद भी कुढते रहते है ।
पुराने ख्यालात के है ना । तुम लोग क्यों दुखी होते हो ?
पापा हम नही दादाजी दुखी है ।
क्यों दुखी होगे ?
क्योंकि उनकी मर्जी का नही कर रहे हो ।
कैसी मर्जी ?
शहर में अकेले रहते । गांव में बडी कोठी बनवाते । ढेर सारी जमीन लिखवाते । पूरी तनख्वाह गांव भेजते तब दादाजी के लिये कलयुग के श्रवणकुमार होते भले हम ना पढ लिख पाते ।
नही बनना ऐसा श्रवणकुमार बेटा ।

6–दर्द

कैसी रही होली ?
ठीक ही समझिये जनाब ।
क्या ठीक समझूं? होली का रंग तो चढा ही नही है तुम पर ।
लूटी नसीब पर कौन रंग चढेगा ?
क्या कह रहे हो ?
चिन्ता और भय के अलावा लूटी नसीब वाले के माथे पर और कोई रंग देखा है क्या ?
ठीक कह रहे हो उजाड़ी नसीब का यही दर्द है ।

7– सावन–भादों

पा.....पापा.....
क्यों घिघिया रहे हो साफ–साफ तो बोलो ।
ये लो चाभी पापा।
क्यों ?
दादाजी के टांके कटवा लाओ ।
तुम जा रहे थे ना बेटा।
जा रहा था पर अब नही । ऐसी क्या बात हो गयी ?
दादाजी को ना जाने क्यों गुस्सा आ रहा है । गालियां दे रहे है । अब आप सम्भालो ।
ठीक है । मुझे तो सम्भाल लोगे ना?
बेटे की आंखे में सावन–भादों उमड पड़े । नन्दलाल भारती

9– बिछोह

बाबूजी सामने देखकर बताओ दिखाई पड़ रहा है ।
जी डाक्टर साहब बहुत बढिया दिखायी पड़ रहा है आपरेशन के बाद ।
पच्चीस हजार खर्च कर दिये है आपके बेटे ने । आजकल धनासेठ औलादें तो मां –बाप को अनाथ–आश्रम भेज रही है । बड़े नसीब वालो हो बाबूजी। महिने भर बाद चश्मा बनेगा जाओ घर आराम करो ।
जल्दी बना दो ना डांक्टर ।
क्यों ?
गांव जाना है । अच्छा नही लग रहा है यहां ।
तकलीफ दे रहे है बेटा बहू क्या ?
नहीं ।
जानती हूं । स्वर्ग का सुख भोग रहे हो फिर भी गांव जाने की जिद ।
हां डाक्टर ?
गांव में कोई बड़ी सम्पति छोड आये है क्या ?
कुछ है ही नहीं ।
जैसा सुख भोग रहे वैसा तो बड़े–बड़े धनासेठों को नही नसीब होता । क्यों स्वर्ग के सुख पर लात मार रहे कैसा बिछोह है बाबूजी ?